स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)

- डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज

भारतीय साहित्य सिद्धांत - काव्य प्रयोजन

मनुष्य के प्रत्येक कार्य प्रयोजन के अनुसार होते हैं। उसी प्रकार काव्य का भी अपना प्रयोजन होता है। काव्य प्रयोजन से तात्पर्य है- काव्य रचना का 'उद्देश्य'। काव्य प्रयोजन का अभिप्राय दो रूपों में मुख्य रूप से स्पष्ट होता है- स्वांतः सुख और आत्माभिव्यक्ति की इच्छा। इसी प्रकार दो और रूप सामने आते हैं- लोकमंगल और दूसरा आनन्द।

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र में काव्य प्रयोजन से सम्बन्धित विवेचना की गई है जिसको निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं-

भारतीय आचार्यों में भरत, भामह, वामन, कुन्तक, रुद्रट, मम्मट, आदि सभी ने इस सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त किया है। भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में काव्य (नाट्य) का प्रयोजन बताते हुए कहा है-

"दुःखार्तानां क्षमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्ति जननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥
धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धि विवर्धनम्।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति॥"

अर्थात् दुःख, श्रम, शोक से आर्त तपस्वियों के विश्राम के लिए तथा धर्म, यश, आयु-वृद्धि, हित-साधन, बुद्धि-वर्धन और लोक को उपदेश के लिए नाट्य काव्य की रचना होगी। अन्य सभी आचार्यों ने भी इनमें से कुछ प्रयोजन को ग्रहण किया है, कुछ को छोड़ दिया है और कुछ अपनी तरफ से जोड़ दिया है।

आचार्य भामह - आचार्य भामह ने 'काव्यालंकार' में काव्य प्रयोजन के सम्बन्ध में लिखा है-

"धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्य निबन्धनम्॥"

अर्थात् काव्य की रचना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति तथा कलाओं में निपुणता की उपलब्धि के निमित्त की जाती है साथ ही वह कीर्ति एवं आनन्द प्रदान करने वाली भी होती है।

आचार्य वामन ने मात्र 'कीर्ति एवं प्रीति' को ही काव्य का प्रयोजन

Scanned with CamScanner

स्वीकार किया है। वे लिखते हैं-

"काव्यं सद् दृष्टादृष्टार्थ प्रीतिकीर्ति हेतुत्वात्।"

अर्थात् सुन्दर काव्य 'प्रीति' और कीर्ति' का हेतु होने से दृष्ट (ऐहिक, लौकिक) प्रयोजन है एवं अदृष्ट फल 'यश' है।

कुन्तक ने तीन बातों पर बल दिया है - (1) धर्म की सिद्धि, (2) लोक व्यवहार ज्ञान और (3) सहृदयों के हृदय को आह्लादित करना।

आचार्य मम्मट ने अपने ग्रंथ 'काव्यप्रकाश' में काव्य प्रयोजनों के सम्बन्ध में लिखते हुए छह प्रयोजन निर्दिष्ट किए हैं-

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेश युजे॥"

अर्थात् काव्य यश का जनक, अर्थ का उत्पादक, लोक-व्यवहार का बोधक, अनिष्ट का नाशक सद्यः (पढ़ने या सुनने के साथ ही) परम आनन्द देने वाला और स्त्रियोचित सरस पद्धति से कर्तव्य का उपदेश प्रदान करने वाला होता है।

इनमें से तीन- अर्थ, यश और अनिष्ट नाश-कवि रचना की दृष्टि से तीन- व्यवहार ज्ञान, आनन्द और कान्तासम्मित उपदेश पाठक या श्रोता को ध्यान में रखकर निश्चित किए गए हैं।

हिन्दी आचार्यों में मुख्यतः तुलसीदास, मैथिलीशरण गुप्त आदि ने भी काव्य प्रयोजन के सम्बन्ध में अपनी अभिव्यक्ति दी है।

गोस्वामी तुलसीदास ने दो काव्य प्रयोजनों की चर्चा 'मानस' में की है - (1) 'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा।"

(2) "कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥"

एक तो स्वांतः सुख दूसरा वही कविता श्रेष्ठ होती है जो गंगा के समान सबका हित करने वाली है।

मैथिलीशरण गुप्त ने केवल 'उपदेश' को ज्यादा महत्व दिया है, वे लिखते हैं-

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥"

पाश्चात्य काव्य चिंतन में काव्य प्रयोजन - (1) काव्य काव्य के लिए (2) काव्य जीवन के लिए (3) काव्य जीवन से पलायन के लिए (4) काव्य मनोरंजन के लिए (5) काव्य आत्मसाक्षात्कार के लिए (6) काव्य एक सर्जनात्मक आवश्यकता की पूर्ति के लिए (7) काव्य अभिव्यंजना के लिए।

नोट :- काव्य (कला)

Scanned with CamScanner